UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 **ISSN 0974 - 7648**

J I G Y A S A

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : ***Indukant Dixit***

Executive Editor : ***Shashi Bhushan Poddar***

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 **May 2019** **No. IV**

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 12, No. IV, May 2019

- **स्वामी विवेकानन्द का जीवन एव शिक्षा दर्शन** **526-530**
  ओम नमो नारायण उपाध्याय, शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **पर्यटन की दृष्टि में पंचक्रोशी तीर्थ यात्रा की उपादेयता** **531-544**
  डॉ. गोपालजी, पूर्व शोध छात्र इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- **प्राचीन काल में कथक नृत्य की स्थिति** **545-548**
  रंजना उपाध्याय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बनस्थली विद्यापीठ
- ***उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण के बाद की कविता में व्यक्ति*** **549-557**
  अश्विनी कुमार सिंह, शोध छात्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली-110067
- **भाषायी राजनीति और हिन्दु-मुस्लिम अस्मिता** **558-563**
  सुरेश कुमार, शोध छात्र, इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **सन्त कवियों की आध्यात्मिक परम्परा दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में** **564-568**
  बिन्दु कुमारी, शोध छात्रा यू.जी.सी., (नेट)जे.आर.एफ., भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **बौद्ध वास्तु में अंकित पशुओं के अंकन का धार्मिक अभिप्राय** **569-574**
  डॉ. विजय प्रकाश भारती, पूर्व शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **गांधी की अहिंसा नीति** **575-579**
  डॉ. श्रुति त्रिपाठी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान
- **अनुच्छद 21- ऐतिहासिक एवं सांविधानिक परिवेश : एक विश्लेषण** **580-587**
  ज्ञान प्रकाश सिंह, शोध छात्र, विधि संकाय, तिलकधारी विधि महाविद्यालय, पीलीकोठी, जौनपुर
- **विशेष शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशी शिक्षा** **588-591**
  कृष्ण कुमार पाठक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय,बिलासपुर, छ.ग.

विशेष शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशी शिक्षा

*कृष्ण कुमार पाठक**

***परिचय** : भारत में सभी को शिक्षा देने की बात लगातार कही जा रही है परन्तु प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे बालक भी होते हैं, जो किसी कारणवश शारीरिक व मानसिक रूप से कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं जिससे वे समाज की उन्नति में अपना योगदान दे सकने में आंशिक या पूर्ण रूप से असमर्थ होते है। असमर्थता की गम्भीरता के आधार पर इन बालकों के शिक्षक की अभिवृत्तियां कई प्रकार की हो सकती हैं। इसी संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बालकों के लिए भी भारत में विशेष शिक्षा एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा जैसे शब्द शैक्षिक शब्दावली में इन बालकों की शिक्षा के लिये प्रयुक्त होते रहे हैं। कुछ शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बालकों के साथ अपने को समायोजित कर लेते है और वे बालकों की इन विशेष आवश्यकताओं को अपने लिए एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते है। ऐसे बालकों को शिक्षित करने के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। विशिष्ट बालकों की पहली आवश्यकता यह होती है कि उनको उनके विशिष्ट गुणों, क्षमताओं और कमियों के आधार पर उनके अनुकूल शिक्षा व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय ताकि वे समाज में अपने आपको समायोजित कर सकें और समाज उनसे लाभान्वित हो सके। समावेशी शिक्षा शिक्षण की एक ऐसी प्रणाली है जिसके माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बालकों को सामान्य बालकों के साथ मुख्य धारा में शामिल किया जा सकता है।*

अध्यापक शिक्षा : अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी शिक्षक को एक कुशल, योग्य एवं सफल शिक्षक बननेके लिए प्रदान की जाती है। अध्यापक शिक्षा का संबंध सीधे तौर पर विद्यालयी शिक्षा से है क्योंकि अध्यापक शिक्षाके द्वारा विद्यालय के लिए शिक्षकों को तैयार किया जाता है। अध्यापक शिक्षा व विद्यालयी शिक्षा एक दूसरे के पूरकहैं। अध्यापक शिक्षा से ही विद्यालयी शिक्षा में सुधार लाया जा सकता है क्योंकि अध्यापक शिक्षा द्वारा अध्यापकों कोतैयार किया जाता है और उनको इस दौरान आवश्यक ज्ञान व कौशल दिया जाता है। अध्यापक शिक्षा का संबंध सिर्फ शिक्षण कला में निपुणता से नहीं है, बल्कि इसकाउद्देश्य भावी शिक्षकों का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास कर उन्हें अध्यापक के विभिन्नउत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से संपन्न करने योग्य बनाना ह। विश्व के लगभग सभी देशों मेंयह स्वीकार

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय,बिलासपुर, छ.ग.